

भाग्य के दरवाजे पर सिर पीटने से बेहतर है, कर्मों का तूफान पैदा करें।

- अज्ञात

## लुइस ग्लूक को इस साल नोबेल पुरस्कार

अब तो यह कि साहित्य की नोबेल समिति ही इधर कुछ समय से विवादों में रही है। दो साल पहले यौन दुराचार संबंधी आरोपों के चलते साहित्य का नोबेल पुरस्कार स्थगित करना पड़ा था लिहाजा 2018 में यह पुरस्कार घोषित नहीं हो पाया।

आरती सिंह।।

अमेरिका के सबसे लोकप्रिय समकालीन कवियों में शुमार की जाने वाली लुइस ग्लूक को इस साल के नोबेल पुरस्कार के लिए चुना जाना कई दृष्टियों से रेखांकित किए जाने लायक है। अब तो यह कि साहित्य की नोबेल समिति ही इधर कुछ समय से विवादों में रही है। दो साल पहले यौन दुराचार संबंधी आरोपों के चलते साहित्य का नोबेल पुरस्कार स्थगित करना पड़ा था लिहाजा 2018 में यह पुरस्कार घोषित नहीं हो पाया। 2019 में दोनों साल के पुरस्कार एक साथ घोषित किए गए। 2018 के लिए पोलिश कवयित्री ओल्गा तोकार्चुक और 2019 के लिए ऑस्ट्रिया के पीटर हंडके को चुना गया। मगर हंडके का चयन इस आधार पर विवादों में रहा कि बोस्निया में सर्व अत्याचारों पर नरम

रुख के चलते कुछ लोग उन्हें नरसंहार समर्थक मानते हैं। साहित्य के किसी भी पुरस्कार को लेकर विवाद उठना आम बात है। लेकिन 2018 के अप्रिय प्रकरण के बाद कम से कम कुछ समय तक सर्वसम्मति नोबेल साहित्य पुरस्कार के हक में मानी जा रही थी, जो पिछले साल उसे नसीब नहीं हुई। ग्लूक का चयन इस अर्थ में नोबेल समिति के लिए भी सुकूनदेह कहा जा सकता है कि उनके इर्द गिर्द ऐसा कोई विवाद उठने की गुंजाइश नहीं है। उनकी कविताओं का तालुक बाहरी दुनिया में जारी उथल-पुथल से उतना नहीं है जितना इंसान की अंदरूनी कशमकश से है। नोबेल समिति के ही शब्दों में कहे तो यह

पुरस्कार उन्हें उनकी उस अचूक काव्य दृष्टि के लिए दिया गया है जो 'अपने सादगीपूर्ण सौंदर्य से वैयक्तिक अस्तित्व को सार्वभौमिक बना देती है।' इस कार्य के लिए वे अपने काव्य बिंब भी प्रायः निजी जीवन या प्रकृति से ही उठाती हैं। इसी बिंदु पर हमें वह दूसरा कारक मिलता है जो इतिहास के इस कालखंड में ग्लूक को हमारे लिए महत्वपूर्ण बनाता है। कोरोना वायरस की चुनौती से जूझता इंसान आज कूदरत को लेकर अधिक संवेदनशील, विनम्र और उत्सुक है। नोबेल समिति के फैसले के पीछे यह बात भी हो सकती है कि प्रकृति को हाहाकार से हटकर देखने में लुइस ग्लूक की कविताएं मददगार साबित होंगी। बाहर

की दुनिया को जीतने के उन्माद से अलग ये कविताएं हमें हमारे अंदर की दुनिया में ले जाती हैं, जहां हम कूदरत के अलग-अलग रूपों और उनसे निकलते गहरे सवाल के साथ खुद को खड़ा पाते हैं। उनसे उलझते हुए जहां हम कूदरत से नजदीकी विकसित करते हैं, वहीं खुद को लेकर अपनी समझ को भी बेहतर बनाते हैं। उदाहरण के लिए, अपनी एक कविता 'अनट्रस्टवर्दी स्पीकर' (अविश्वसनीय वक्ता) में वह कहती हैं कि 'मेरी बात मत सुनो मेरा दिल टूट गया है मैं कुछ भी निष्पक्ष होकर नहीं देखती।' इसी कविता में वह आगे कहती हैं, 'मैं जितनी तीव्रता से कहती हूँ, उतनी ही अविश्वसनीय होती हूँ जब मैं चुप होती हूँ तभी सत्य उभरता है।'

### सफलता

अशोक वोहरा। मुश्किलों से दूर भागकर आप अपनी सफलता को खुद से और भी दूर भेजते चले जाते हो। सफलता के रास्ते में आने वाली मुश्किलों का सामना आपको कंधे से कंधा मिलाकर करना चाहिये। आँख से आँख मिलाकर आने वाली मुश्किलों का सामना करना चाहिये। और हमेशा यही सोचना चाहिये की आप कोई भी मुश्किल से मुश्किल काम कर सकते हो।

### धर्म-दर्शन



बहुत से कम सफल लोग यही सोचते हैं की अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जिंदगी ही उन्हें कभी आकर्षित करेगी। ऐसे इंसान वे क्या करना चाहते हैं की बजाये क्या कर रहे हैं इस बात पर ज्यादा ध्यान देते हैं। यदि आप अपने लक्ष्य को रोज पुनर्स्थापित करते हो तो आपके लिये सबसे अच्छी बात यही होगी की आप आसानी से उसे प्राप्त कर सकते हो।

## संपादकीय

### फैशन, फेथ, फैंटसी

पेनरोज से मेरी दूसरी किताबी मुलाकात अनेस्थीसियोलॉजिस्ट (बेहोशी विज्ञानी) स्टुअर्ट हैमरॉफ के साथ मिलकर लिखी गई उनकी किताब 'द लार्ज, द स्मॉल ऐंड द ह्यूमन माइंड' के कुछ अंशों के अनुवाद के दौरान हुई, जिसमें चेतना को क्वांटम मेकेनिक्स के जरिये समझने की उनकी कोशिश ने हैरान किया था। इसकी प्रस्थापनाओं को कई जीव विज्ञानियों ने काटा, लेकिन फिर दोनों पक्षों के बीच कुछ समझदारी भी बनी। आने वाले दशकों में भौतिकी और जीव विज्ञान के संधि स्थल पर होने वाले काम की दिशा शायद यही रहे। बचकानी बातों से आगे चलें तो 'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' भी कोई बहुत आसान किताब नहीं है लेकिन 'द एंपरर्स न्यू माइंड' उच्च गणित से गुजर चुके लोगों के लिए भी एक कठिन किताब है। आपको पुरानी धारणाएं बदलने और कोशिश करके नई धारणाओं को समझने, उनको अंगीकार करने के लिए खुद को तैयार रखना होता है। लेकिन वैज्ञानिक दायरों में सबसे ज्यादा बात 2016 में आई पेनरोज की किताब 'फैशन, फेथ ऐंड फैंटसी इन द न्यू फिजिक्स ऑफ द यूनिवर्स' पर हुई है, जिसमें उन्होंने भौतिकी की बहुचर्चित 'स्ट्रिंग थिअरी' को एक निराधार फैशन, 'क्वांटम मेकेनिक्स' को उथले स्तर पर गटक ली गई आस्था, और खगोलशास्त्र का एक अनिवार्य घटक समझे जाने वाले 'कॉस्मिक इन्फ्लेशन' को एक फैंटसी, कपोल कल्पना करार दिया है। उम्मीद करें कि नए दौर के भौतिकशास्त्री उनकी इन आपत्तियों को गंभीरता से लेंगे।

संयोग कहे कि पिछले तीन-चार वर्षों में नीयर-इन्फ्रारेड टेलिस्कोपों की ताकत बढ़ने और एडिप्टिव ऑप्टिक्स की तकनीक सुधरने से ब्लैक होलों पर सीधे नजर रखना संभव हो गया है।

## गेंजेल और गेज

चंद्रभूषण।।

भौतिकशास्त्रियों के बीच आम धारणा यही रही है कि रॉजर पेनरोज को नोबेल प्राइज कभी नहीं मिलेगा। उनके मित्र स्टीफन हॉकिंग अपने लिए घोषित कर चुके थे कि उन्हें यह पुरस्कार तभी मिल सकता है जब किसी ब्लैक होल से रेडिएशन का होना दर्ज कर लिया जाए। इसकी संभावना अगले हजारों साल में भी नहीं दिख रही, लिहाजा नोबेल मुद्दे पर उन्हें सब्र ही करना पड़ेगा। कम्प्लेक्स ऐसी ही स्थिति पेनरोज की भी रही है। गणितज्ञों में भौतिकशास्त्री और भौतिकशास्त्रियों में गणितज्ञ! संयोग कहे कि पिछले तीन-चार वर्षों में नीयर-इन्फ्रारेड टेलिस्कोपों की ताकत बढ़ने और एडिप्टिव ऑप्टिक्स की तकनीक सुधरने से ब्लैक होलों पर सीधे नजर रखना संभव हो गया है। गुरुत्व तरंगों (ग्रेविटेशनल वेव्स) की मेहरबानी से न्यूट्रॉन स्टार और ब्लैक होल के टकराने जैसी असंभव समझी जाने वाली घटनाएं निरंतर खबरों में रहने लगी हैं। नतीजा यह कि 87 की उम्र में नोबेल का सेहरा पेनरोज के सिर पर सज गया।

इस साल भौतिकी का नोबेल पुरस्कार उनके अलावा राइनहार्ड गेंजेल और एंड्रिया गेज को मिला है। पुरस्कार की आधी राशि रॉजर पेनरोज को 1965 में यह सिद्ध करने के लिए कि थिअरी



ऑफ रिलेटिविटी अनिवार्य रूप से ब्लैक होल के सृजन की ओर ले जाती है। कसरत का महत्व इस बात में था कि थिअरी ऑफ रिलेटिविटी के खोजी अल्बर्ट आइंस्टाइन को मरे तब तक दस साल हो चुके थे, और वह अपनी अंतिम सांस तक यही मानते रहे कि ब्लैक होल की धारणा में निश्चय ही कोई झोल है। किसी बिंदु पर हर तरफ से सिर्फ एक ही बल (गुरुत्व) कार्य करे, उसे संतुलित करने वाले सभी बल समाप्त हो जाएं, यह बात तर्क और बुद्धि से परे है। बहरहाल, भौतिकी में सुंदर सिद्धांत लगातार आते रहते हैं लेकिन वजन उन्हें तभी मिलता है, जब वे प्रेक्षकों की कसौटी पर बाकी सिद्धांतों से ज्यादा खरे उतरें। पेनरोज को इस कसौटी पर कसने का काम अपनी टीमों और टेलिस्कोपों के साथ हवाई और चिली में सालोंसाल बैठे गेंजेल और गेज ने किया— हमारी आकाशगंगा के केंद्र में अनुमानित

ब्लैक होल 'सैजिटेरियस ए स्टार' की टोह लेकर। बहरहाल, रॉजर पेनरोज पर बात करना केवल इसलिए जरूरी नहीं है कि उन्हें भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिल गया। यह तो हर साल मिलता है और इसके अधिकारी प्रायः दो या तीन लोग पाए जाते हैं। रॉजर पेनरोज द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उभरे प्राकृतिक दर्शन के गिने-चुने नामों में एक हैं। उनके काम का दायरा गणित, खगोल विज्ञान, फंडामेंटल फिजिक्स, गणितीय कला और कंप्यूटर साइंस से लेकर मनोविज्ञान को छूता हुआ पदार्थ और चेतना की संधि तक फैला है। और इनमें से किसी भी क्षेत्र में उनकी भूमिका पाला छूकर निकल जाने वाली नहीं है। हर जगह उनकी कोई ऐसी छाप मौजूद है कि उधर से गुजरते हुए आपको उनके द्वारा किए गए बदलावों को नोटिस लेना पड़ता है। एक मायने में यह ब्रिटिश गणितज्ञ यूरोप के महान उद्बोधन काल की याद दिलाता है, जिसमें हर कद्दावर चिंतक की एक से अधिक शास्त्रों और भाषाओं में गहरी गति हुआ करती थी। दो साल पहले गुजरे स्टीफन हॉकिंग की रॉजर पेनरोज के साथ अक्सर तुलना की जाती थी, लेकिन काम पर गौर करें तो दोनों का फर्क जगजाहिर है। निजी तौर पर मैंने पेनरोज का नाम सबसे पहले 1989 में पटना में सुना था, जब पॉप्युलर दायरे में उनकी पहली किताब 'द एंपरर्स न्यू माइंड' आई ही आई थी।

सूटो कु बवताल - 5500				****			
4				1	8		
		6	7			2	
		8					
8	5						
2		1			7		
					3	5	
				5			
1		4	7				
9	6						4

सूटो कु बवताल - 5499 का हल			
1	9	7	4
4	5	3	9
2	6	8	7
5	3	1	2
9	2	4	8
7	8	6	5
3	4	9	6
6	7	2	1
8	1	5	3

### अपना ब्लॉग आम पाठकों के लिए ही है

मोहन। वैज्ञानिक दर्शन में दिलचस्पी रखने वाले नौजवानों का रुझान उस समय स्टीफन हॉकिंग की लोकप्रिय किताब 'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' की तरफ था जो 1988 में आते-आते ही पूरी दुनिया पर छा गई थी। इसकी एक वजह यह भी थी कि सीधे पेपरबैक में आई यह किताब ज्यादा महंगी नहीं थी और साल भर में इसका पाइरेटेड संस्करण भी दिल्ली में दरियागंज से लेकर पटना में गांधी मैदान तक किताबी चोर बाजारों में सहज उपलब्ध होने लगा था। लेकिन कानपुर आईआईटी से तुरंत लौटा मेरा मित्र झटपटिया पढ़ाई में बिला शक मुझसे बहुत आगे था और मेरी हॉकिंग चर्चा को उसने तत्काल अपनी पेनरोज चर्चा के नीचे दबाकर लिया। हाँ, पेनरोज की किताब भी गणित या कंप्यूटर साइंस के छात्रों के लिए नहीं, आम पाठकों के लिए ही है। बस, स्टीफन हॉकिंग की तरह पाठकों पर रहम करने के लिए फॉर्म्युलों से बचने का कोई आग्रह उनके यहां नहीं है।

### न्याय की धीमी गति

